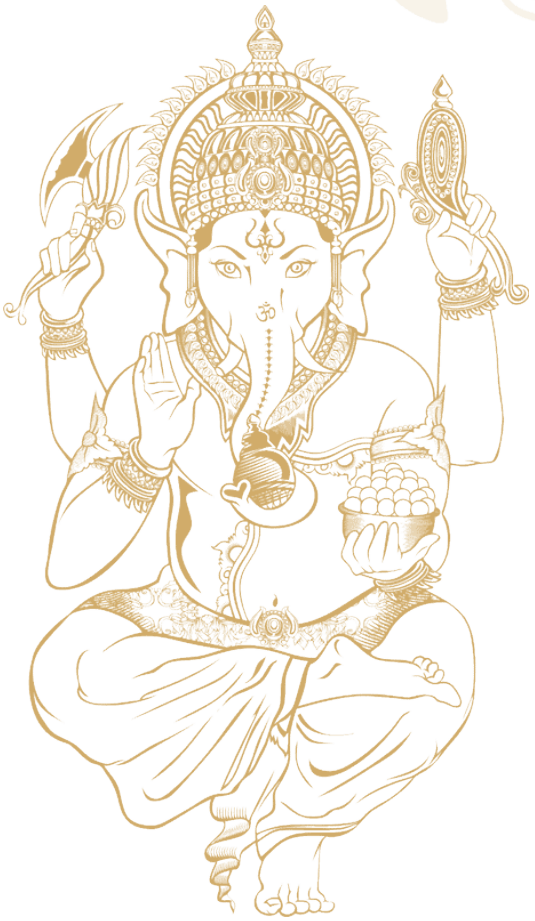

R

M

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121016603

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/12/1995	जन्म तिथि	8-09/06/2001
गुरुवार	दिन	शुक्र-शनिवार
घंटे 08:00:00	जन्म समय	04:45:00 घंटे
घटी 02:16:11	जन्म समय(घटी)	58:25:19 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:05:31	सूर्योदय	05:22:52
17:25:19	सूर्यास्त	19:17:36
23:48:08	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:20

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 17वर्ष 7मा 23दि		09:15:44	धनु	लग्न	वृष	13:45:46	सूर्य 5वर्ष 7मा 6दि	
चन्द्र		27:48:28	वृश्चि	सूर्य	वृष	24:19:49	राहु	
08/08/2019		14:54:02	सिंह	चंद्र	धनु	27:33:12	15/01/2024	
07/08/2029		16:30:39	धनु	मंगल व	धनु	00:23:43	14/01/2042	
चन्द्र	07/06/2020	09:16:59	धनु	बुध व	मिथु	05:17:01	राहु	27/09/2026
मंगल	06/01/2021	01:35:56	धनु	गुरु	वृष	28:21:34	गुरु	19/02/2029
राहु	08/07/2022	26:43:12	धनु	शुक्र	मेष	08:32:50	शनि	27/12/2031
गुरु	07/11/2023	24:38:01	कुंभ	शनि	वृष	12:21:03	बुध	16/07/2034
शनि	07/06/2025	00:47:04	तुला व	राहु	मिथु	12:28:59	केतु	03/08/2035
बुध	07/11/2026	00:47:04	मेष व	केतु	धनु	12:28:59	शुक्र	03/08/2038
केतु	08/06/2027	04:35:30	मक	हर्ष व	कुंभ	00:55:22	सूर्य	28/06/2039
शुक्र	05/02/2029	00:14:42	मक	नेप व	मक	14:41:08	चन्द्र	27/12/2040
सूर्य	07/08/2029	07:30:26	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	19:55:45	मंगल	14/01/2042

लग्न-चलित

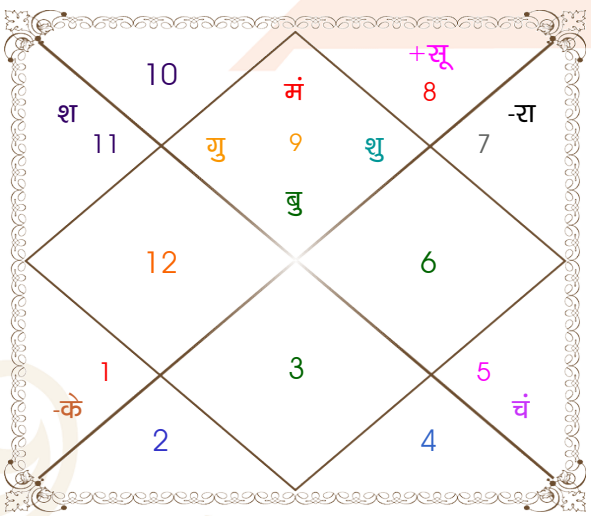

लग्न-चलित

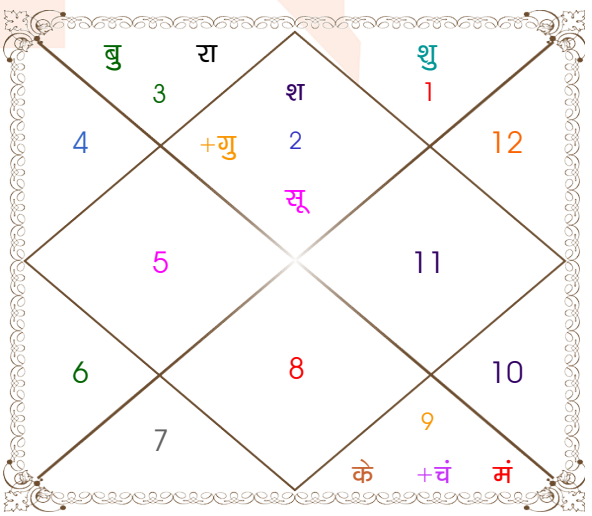

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	चतुष्पाद	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मूषक	नकुल	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	धनु	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

त का वर्ग मूषक है तथा ड का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार त और ड का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

त मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु त कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ड मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र ड कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि ड कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु त कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त तथा ड में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।